अब ऐसे ज्ञान से क्या होगा

अब ऐसे ज्ञान से क्या होगा,
अज्ञान से ही वह भरा होगा।
मैं तो उसको ज्ञान कहूँ पिया,
जब सामने राम खड़ा होगा।।

और तो कुछ न जानूँ पिया,
कुछ भी तो समझ न आये मोहे।
इक बेरी तू घर आओ पिया,
कर जोड़े पड़ूँ शरणा तोरे।।

तेरे दर्शन से जन्म मल मेरी,
दूर हो ज्यों तूने दी हो बुहार।
इक बेरी प्रभु बस इक बेरी,
तू भी तो आकर मुझे पुकार।।

अब बिनती करूँ मैं बार बार,
पिया इक बेरी तो तू भी पुकार।
कब से हूँ रही मैं पंथ निहार,
इक बेरी तू मुझको भी निहार।।

श्रीमद्भगवद्गीता -
द्वितीय अध्ययन- १५/१०

अनुक्रमणिका

३. **हे माँ! इसी सर्वव्यापकता में**

बस चलती ही चलूँ
श्रीमती पम्मी महता

८. **मेरा कुछ भी नहीं, मैं हूँ ही नहीं,**

जो है मालिक सब है तू...
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

११. **दिव्य जीवन...**
सुश्री छोटे माँ

१४. **...माया रूप भी परम ने,**

आप ही तो धराया है।
'मुण्डकोपनिषद्' में से

१८. **अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता'-**

'भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

२३. **अंतर्मुखता**
पिता जी के प्रश्नोत्तर

२८. **मन्दिर में रहते हो भगवन**

कभी बाहर भी आया जाया करो...
श्रीमती पम्मी महता

३१. **भक्त ज्योति पंत**

३७. **अर्पणा समाचार पत्र**

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा दिसम्बर २०१६ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

हे माँ!

इसी सर्वव्यापकता में

बस चलती ही चलूँ

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य माँ के साथ उल्लासपूर्ण वार्तालाप में श्रीमती पम्मी महता...

अरे मन, अब तलक तो तू समझ ही गया होगा कि भगवद् कृपा तुझे करुणापूर्ण श्री हरि माँ से मिली है। देख न, कैसे-कैसे अवसर दे रहे हैं तुझे... तेरे अंतर में श्रद्धा सुमन खिलाने के लिए! कितना भाग्यवान है तू!

यह फूल तभी खिलेंगे, जब जहाँ जो भी करोगे भगवद् अर्थ ही करोगे सभी! और वह भी पूर्णतया राममय हो कर! तेरी भाव भावना सभी उन प्रभु के नाम से भरी होंगी... तभी तो आप प्रभु में श्रद्धा पनपेगी! धन्य भाग्य मानी इस मिले अवसर को आदर व कृतज्ञ भाव से उठा ले। प्रभु व प्रभु जी की देन बार-बार हृदय-द्वार पर दस्तक नहीं देती... उनके तो यह असीम अनुग्रह बहुत ही मूल्यवान होते हैं।

आ देख, करुणाकर प्रभु स्वयं तुझे 'मैं' के अभिशाप से मुक्त करने के लिए ही तो आये हैं। कितनी शुभ व मंगलमयी बेला है। उन दीनदयाल की करुण-कृपा को हृदय-दामन में भर ले! हम अपने लिए ही तो जिये जा रहे हैं! आज जीवन के अंधकार को अपनी रोशनी से भरने स्वयं श्री हरि जगद्जननी माँ आये हैं! हृदय-वीणा पर उन्हीं के स्वरों को झंकृत होने दे...

इस पल पाषाण हृदय को मोम की तरह पिघलने का तुझे अवसर दे रहे हैं। देख-देख! स्वयं ज्योति स्वरूप तेरे अंतर में अपना ही विस्तृत विस्तार करने आये हैं। अब तो थोड़े ही पल साथी रह गये हैं; उन पलों को नाहक गँवाना नहीं हे मन! आ, उन्हीं परवरदिगार के क़दमों में जा... उन्हीं की वाणी का सत्य जीवन में उतरने दे, जो तू भी उन्हीं में रहकर जीवन में वर्तना सीख जायेगा!

जब उन्हीं की कृपा से उन्हीं को ध्याया...

उन्हीं को पूजा... तो उसी को पूजा बना ले!

अतीव पूज्य भाव से, जो आपने दिया प्रभु जी स्वयं ही स्वीकार लें!

यह तो भगवान जी का बुलावा है... जी जान से स्वीकार करी, उन्हीं की जगती रूपा चरणन् की सेवा में लग जा! यहाँ अपना पराया कोई नहीं; सभी उन्हीं श्री हरि के हैं, इसीलिए तेरे हैं! इसलिए करती ही चली चल!

तुझे सत् में ही तो ला रहे हैं श्री हरि जगद्जननी माँ! तेरे उत्थान के लिए ही तो आप करुणा के सागर आये हैं... जैसे तुझ नमानी को श्री हरि माँ ने क़बूल किया हुआ है उसी तरह सभी को हृदय से क़बूल करती चली चल... चलती ही चली चल!

भगवद् कृपा में चल...

शरणागत की तरह चल...

हे मन, उन प्रभु माँ बिन कुछ और चाहने की इच्छा न रखते हुये चल...

जित देखे तू, तुझे हर रूप में माँ ही मिलें। पूर्ण आस्था लिये उन्हीं में चल...

वे स्वयं तेरी अंतर की बग़िया खिला देंगे, तुझे अपने प्रेम सों भरपूर करते हुये अपने ही रंग में रंग लेंगे। आ, सभी को भगवान जी का जानकर अपना ले! मत रोकना कहीं भी अपने को... क्योंकि श्री हरि तेरे लिए ही तो युगों से चलते चले आ रहे हैं। उन करुणामयी माँ की कृपा तो देख, उन्होंने कभी भी तुझे अस्वीकार नहीं किया। वे तो निरन्तर तेरा इंतज़ार ही करते रहे हैं... अब के उन में विलीन होकर स्वयं को उन्हीं में विराम दे ले!

हे मन, आ!

उनके कहे का मान रख कर चल...

उन्हीं के अदब में चल...

उनके असीम अनुग्रह में चल...

दिन-रैन उन्हीं से प्रीत बढ़ा कर चल...

जो आपके नाम की ही महिमा रह जाये - उन्हीं की महिमा गाते हुये ही चल...

इस नामी में खो कर चल...

भगवद् अर्थ चल...

तेरे भावों की शुद्धता उनकी पवित्रता में ढलकर विराम पा ले, इसी तमन्ना के दीप जलाये रख! जो भी दीपक प्रभु माँ तुम्हारे जीवन में जला देते हैं, उसे कभी भी बुझने नहीं देते। इसलिए इस सत्य को अंगीकार किये रह और उन्हीं के क़दमों से मिली राह पर असीम श्रद्धा व भक्ति से चलती चली चल...

कहीं रुकना नहीं तुझे...

उन्होंने तुझे वही दिया जो तेरे लिए उचित था। उन्हीं की जीवन-धारा को स्वयं में बहने दे। उन्हीं के क़दमों को धारण करते हुये उन्हें ही सिजदे में धर, सिजदा देती चल और असीम प्रेम से व श्रद्धा भक्ति भाव से चलती चली चल...

हे मन, तू चलेगा न ऐसे ही! स्वयं को उन्हीं के अधीन करके चल...

उत्तरोत्तर बढ़ता ही चला चल...

उन्हीं की रवायनगी में चल...

उन्हीं में आस्था लिए चल और भूल जा ख़ुदी को, उन्हीं में चलने से ही बेख़ुद हो पायेगा! उन परवरदिगार की रहमत देख, उनसे मिली हर बख़्शिश को देख, फिर तू उन क़दमों से उठ ही नहीं पायेगा! आ मन, उस पार चलें, जहाँ तोरे साईं रब, तोरे साहिब, तोरे परवदिगार रहते हैं!

मैं क्या जा पाऊँगी? प्रभु माँ स्वयं ही लिवा ले जायेंगे, मेरी अनुनय-विनय स्वीकार करी! उनके क़दमों से उठना नहीं, जब तक वह स्वयं तुझे परवान नहीं कर लेते।

हरि ओऽम् तत्तसत्! इसे अपने से ही सनाथ करी ले चलिये.... जहाँ आप ही आप बाबस्ता हैं। यह अधीर मन आप में विलीन हो कर ही विराम पायेगा।

हे परवरदिगार, आप जहाँ लगायें वहीं लग जाऊँ!

आईये, श्रीवर आईये, इसे भी तार लीजिये। अब कुछ ऐसा ही कीजिये जो आपकी हर देन को जीवन में स्वीकार करती ही चलूँ। जीवन में वह सभी धारण कर लूँ, जो इसे अपने से आपने दिया है... आपके क़दमों ने चल कर उस मनो धरा को दिया है! धन्य हैं आप हे माँ, जिन्होंने इस अपनी कनीज़ को यूँ धन्य-धन्य किया है!

हे श्री हरि नाथ मैं तो बिन जाने, बिन माने ही आपसे अपनी ओर लिवाई गई थी। आपने ही अपनी करुण-कृपा में ला, मुझे दिया ही दिया निरन्तर ही! यह ज्ञान ध्यान क्या होता है, मैं अल्हड़ सी, नादान कुछ भी तो नहीं जानती थी। कितनी नासमझ थी... आप कृपालु दयालु माँ ने ही तो मानो पहली कक्षा में बिठाया व सिखाना शुरु किया। इस चंचलमन को स्थिर करना सिखाया, कैसे रहते हैं जीवन में... आपने अपने जीवन की किताब को मेरे समक्ष खोलना शुरु किया।

इसके चंचल मन को स्थिर करना सिखाया - आप हर हाल में ख़ुश रहते हैं इसे देख मैं हैरतज़दा हो जाती व साथ ही साथ बहुत ही अच्छा भी लगता! सच ही कोई है, जो हर हाल में इस क़दर ख़ुश रहता है व रह सकता है! कितनी सहजता से आप कह देते, "ख़ुश रहो"! सच माँ, यह पहलू आपका देख मैं आत्मविभोर हो जाती। वाह, यह हुआ न जीने का अंदाज़!

जब संग नहीं रहता अपने से, तो ख़ुशी स्वयं ही आन्तर में आ जाती है... या रफ़्ता-रफ़्ता आनी शुरु होती है। यह वह ख़ुशी है जो प्रभुपथ पर उन्हीं से मिलती है। तब विधान की ही विस्तृत विस्तार की झलक मिलने लगती है... फिर आन्तर से यही प्रार्थना निकलती है, 'हे दीनानाथ दयालु प्रभु जी, यह ही स्थाई हो जाये! कल्याण की भावनायें ही मन में तरंगित होती रहें!'

हे आनन्दमयी माँ! आप सच ही धन्य हैं और जीव जगत को धन्य-धन्य करने यूँ बार-बार मानस की जात के लिए अवतरित होते हैं! यही दुआ अंतर से निकल कर आर्त पुकार बन जाती है... यारब! आप ही आप स्थाई रूप से रहिये। जो सदा आप ही आपके श्री चरणन् में चित्त लगा रहे!

जीवन के संग से मोह माया के जाल में, सुख दुःख के हिंडोले में झूल-झूल कर आप ही को भुला बैठी। शुक्रिया आपका, जो आपने मुझे प्रेरित करी अपने पास बुला लिया। हे मन, भगवद् अर्थ जीने का आनन्द ले, प्रेमपूर्ण आनन्द का अमोर्ध रस पी! यहाँ तो साक्षात् भगवान ने तुझे उठाया है अपनी ओर लिवा ले जाने के लिए। आ, उनका प्रतिपल, धन्यवाद करते हुये उन्हीं के जीवन से मिले दिव्य प्रसाद को ग्रहण करते हुये अपनी साधना का आग़ाज़ होने दे!

हे मन, इस परम सौंदर्य को अपने जीवन में आने दे। उन श्री हरि माँ का नूरानी नूर जो इलाही है, उसे प्रेम से अपने अंतर में आने दे। अपने प्रभु की सभी देन को दृष्टा भाव में रह कर देख व चल... मन को अमन करते हुए ही चल! उन्हीं को क़दमों में सिजदा देते हुये चल... प्रभुमय हो कर चल! तू जान चुका है तेरे किये जीवन में कुछ नहीं होता। उन्हीं श्री हरि

नाथ की कृपा से ही होता है। सो उन्हीं की करुण-कृपा माँगते हुये चल!

श्री हरि माँ स्वयं तुझे ले चलेंगे... अरे वह लिए चले जा ही तो रहे हैं। उन्हीं का दिव्य प्रसाद ग्रहण कर। जो आये, उसे प्रभु जी ने ही भेजा है, यह जानकर ही उसे हृदय से स्वीकार करी अपने प्रभु को भोग लगा! फिर जो वे हुक्म करें उसे मानते हुए चल... उस इलाही नूर के शबाब में ढलकर चल... भगवान जी को रूबरू करके चल... चहुँ ओर उन्हीं के दर्शन कर! उन्हीं श्री हरि की दस्तक ही हमसफ़र बनती है तभी तो उनकी कृपा में ही रास्ता तय होता है।

तो आ, मिलकर हाथ में हाथ डाल कर चलें! तू ही तो मेरा अपना आप है, सो आ मिलकर व हाथ में हाथ डाल कर चलें। आप श्री हरि परम पूज्य माँ ने ही तो सत् के चिराग़ जलाये हैं, फिर अँधेरों का क्या काम...? आ, रोशनाई में ही हे मना चल, जिनकी मात्र झलक ने ही तुझे तेरे अँधेरों से निजात दिलाई है! हे श्री हरि परम पूज्य माँ, आप ने अपने जीवन से बता दिया कि जग में आपके सिवा कुछ नहीं। जो होता है, आप ही की रज़ा में होता है :

उसी परम सत्य में एकनिष्ठ होकर चलना ही तो आप प्रभु माँ की देन है!

यही तो भगवद् कृपा है!

यही आपकी करुण-कृपा का प्रसाद है!

बस यही असीस दीजिये, कि आपके उस अनुग्रह को तहेदिल से क़बूल करते हुये ही चलूँ और चलती ही चलूँ...

हे परम पूज्य श्री हरि माँ, जिस पथ पर आपने इसे डाला है, आपके इस दिव्य व अलौकिक प्रसाद को क़बूल करते हुये, आपकी सम्पूर्ण जगती को स्वीकार करते हुये चलती ही चलूँ, चलती ही चलूँ...

कितनी पुण्य तिथि थी जब आप मेरे जीवन में आये!

कितनी अद्भुत व विलक्षण जीवनी आपकी के दर्शन भी मिले! और जीने का राज़ भी मिला!

ईश्वर कृपा यूँ ही बरसती रहे व इसी लोक में चलती ही चलूँ, निरन्तर ही चलती ही चलूँ...

यही दुआ व अनुनय विनती भी है मेरी और करबद्ध प्रार्थना भी कि अब से आज से कभी भी जन्म-जन्म आपसे वियोग न हो! हरि ओऽम्!

आपकी, हे माँ इसी सर्वव्यापकता में बस चलती ही चलूँ - आमीन!

मेरा कुछ भी नहीं, मैं हूँ ही नहीं,
जो है मालिक सब है तू...

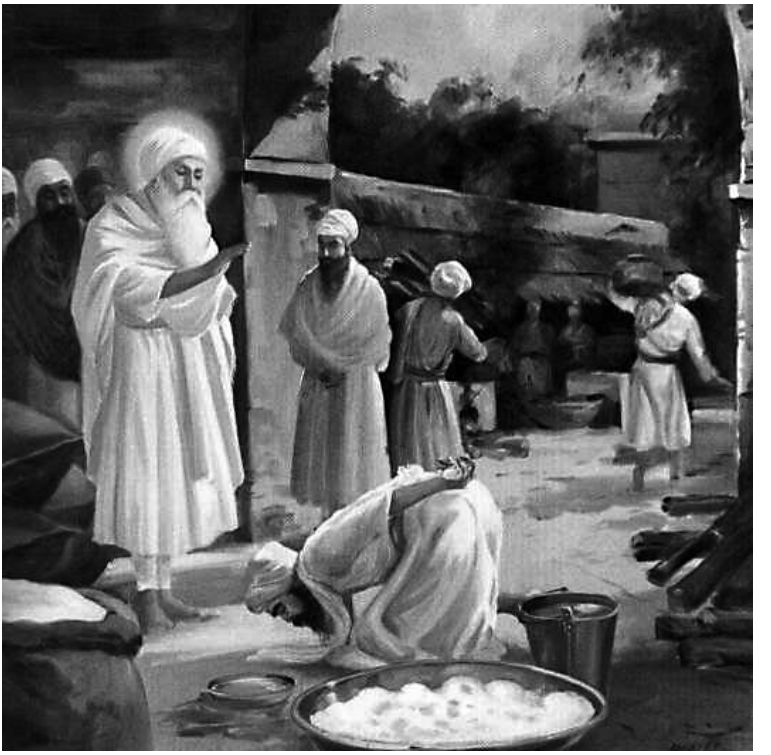

गतांक से आगे–

पौड़ी २९

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि
घटि घटि वाजहि नाद।
आपि नाथु नाथी सभ जाकी।
रिधि सिधि अवरा साद।
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि।
लेखे आवहि भाग।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु।।२९।।

शब्दार्थ : *योगी के लिये ज्ञान ही भोजन है, दया ही उस ज्ञान के भण्डार को सम्भालने वाली है, प्रत्येक हृदय में उस परमात्मा का नाद बज रहा है। हे प्रभु! आप ही नाथ हैं, जिसकी सब सृष्टि बूझी हुई, जिसके अधीन सारी सृष्टि है, और जिसके अधीन सारी ऋद्धियों सिद्धियों का और संसार का स्वाद है। संयोग तथा वियोग, दोनों इस सृष्टि का काम चला रहे हैं। कर्म के अनुकूल ही भाग्य मिलते हैं अर्थात् रेखा का निर्माण होता है। उसको नमस्कार है, उसको नमस्कार है - जो आदि है, वर्णरहित है, आदि रहित तथा नाश रहित है और युगों-युगों में एक रूप है।*

पूज्य माँ :

ज्ञान ही भोजन बन जाये, करुणा के भरे भण्डार।
अखण्ड साम वा गुण गाये, और गूँज उठे संसार।।१।।

आप रचयिता खेवनहारा, है आप ही सूत्रधार।
पर ऋद्धि सिद्धि तो जग धावे, है नाम परम रस सार।।२।।

संयोग वियोग पूर्ण जग के, कर्मन् का है आधार।
रेखा में जो लिख चुका, मिले सबको अपना अधिकार।।३।।

सीस धरूँ मैं आदेश प्रभु का, हर जन्म का मीत हमार।
आदि अनादि अनन्त अविनाशी, अखिल रूप एक आधार।।४।।

ज्ञान ही भोजन निरन्तर मिले, ज्ञान तोरा है नाम।
तोरा जीवन ज्ञान कहूँ, जीवन में मिले जो प्रमाण।।५।।

दया का भण्डार भरे, दया है तुमरो नाम।
करुणा क्षमा उदारता, और वडियाई तव नाम।।६।।

भण्डार भरे तेरी दया के, इक बुँदिया मुझको भी मिले।
करुणा स्रोत वहाँ बह जाये, तेरे नाम की महिमा नित्य बहे।।७।।

ज्ञान मिले तब ही मुझे नानक, तेरा नाम गर मुझे मिले।
हृदय में तू गर आन बसे, दया भण्डारी मन भये।।८।।

अखण्ड गुण तेरे गाये, हर काज कर्म तेरा गान भये।
पूर्ण जग में जित दृष्टि जाये, तेरा रूप तब दिख पड़े।।९।।

तू आप रचयिता सम्भाले आप, रेखा तेरे हाथ है।
सूत्रधारी तू आप नानक, कर्म का मालिक आप है।।१०।।

ऋद्धि सिद्धि अब क्या मैं माँगूँ, तूने ख़ुद ही कहा तोसों दूर करे।
मुझको ऐसी भिक्षा दो, जो तेरे नाम को ज़हूर करे।।११।।

संयोग वियोग ये राग द्वेष, यह संग बहाते रहते हैं।
कर्म आधार यह बन करके, इस मन को उभारे बैठे हैं।।१२।।

होगा वही जो तूने कहा, जो हुक्म किया हो जायेगा।
कर्म अनुकूल तुम कहो, सब कुछ अब मिल जायेगा।।१३।।

मैं तो इतना माँगूँ मालिक, हृदय में तेरा नाम बसे।
जो तूने कहा वह नित्य करूँ, तेरी हुक्म रज़ा में मन रहे।।१४।।

आदि तू जुगादि तू, अनन्त और अविनाशी तू।
बाक़ी उठें उठ के मिटें, सच्चा मालिक एको तू।।१५।।

तू आत्म तत्व तू अखिल आधार, नाम आधार एको तू।
अखिलपति तू आप है, त्रिलोकपति है आप तू।।१६।।

नित्य शाश्वत आप है तू, अखण्ड अद्वैत आप है तू।
हर रूप तू ही आप धरे, फिर सब मिटाये आप तू।।१७।।

तुमसे उभरें तुममें जा मिलें, अनन्त सागरा आप है तू।
लहरें उठें सौम्य भयें, बुलबुला उठे मिटे रहे तू।।१८।।

ओ मेरे मालिक बादशाह, जो है सब है तू ही तू।
सर्वाधार सर्वव्यापी, सर्वपति इक बस है तू।।१९।।

सर्वात्म तू आप है, सर्वोत्तम बस इक है तू।
विश्वपति तू प्राणपति, मेरा पति भी एक है तू।।२०।।

तू आत्म तत्व स्वयंभू आप, स्वयं प्रकाश बस एको तू।
कह के यही बता रहा, सब का आधार है एको तू।।२१।।

मैं ज्ञान की बातें क्या कहूँ, मैं नाम की बातें क्या कहूँ।
गुणगान की बातें क्या कहूँ, सब है तू इतना कहूँ।।२२।।

जो चाहो तुम अब करो, सूत्रधार मैं तुझे कहूँ।
तू आप रचयिता सम्भाले आप, जो चाहे करो मैं तुझे कहूँ।।२३।।

ओ नानका मेरे बादशाह, रहमदिल मेरे आप है तू।
ओ दरियादिल कुछ रहम कर, ग़रीबपरवर आप है तू।।२४।।

काल का कफ़न पहरा ही दिया, ध्यान चरण में लगा ही दिया।
मन में चैन बिठा ही दिया, यह तो सब कुछ तूने किया।।२५।।

अब नानक मेरे आक़ा मेरे, रहीम मेरे सब है तू।
ख़ुदावंद तू साहिबा मेरे, मौला मेरे एक है तू।।२६।।

चरण पड़ूँ चरणों की धूलि, अब साहिबा मैं बन जाऊँ।
सब है तू तोरे चरण धरूँ, और मौन मैं हो जाऊँ।।२७।।

मेरा कुछ भी नहीं मैं हूँ ही नहीं, जो है मालिक सब है तू।
अखण्ड अद्वैत दिव्य है तू, जो है सब बस तू ही तू।।२८।।

क्रमशः

दिव्य जीवन...

पाठशाला में अपनी सखी के प्रति विलक्षण दृष्टिकोण!

परम पूज्य माँ

शास्त्रों में आता है कि साधना जन्म जन्म से साथ आती है... साधक ने जितना भी अपने मन को साध लिया हो वह उसका निजि धन बन कर साथ ही आता है। जितना हम जाग जाते हैं - उतनी ज्योति अंतर में जल जाती है। वह हमारी अपनी कमाई बन जाती है। उतना उतना चित्त पावन होता जाता है। हमारा सोचने का ढंग बदलता चला जाता है।

अंतर्मन में एक ज्योत जल जाती है और उस ज्योत की अध्यक्षता में हमारे सोचने का ढंग बदल जाता है। परिस्थिति के प्रति मनोझंकार बदल जाती है। मन के बादल हट जाते हैं। हमारा

अपनी सखियों के साथ परम पूज्य माँ

दृष्टिकोण बदल जाता है। इसका प्रसाद पूज्य माँ के जीवन में प्रारम्भिक अवस्था में ही उपलब्ध होता है।

पूज्य माँ जब सातवीं कक्षा में पढ़ा करते थे तो उस कक्षा में उनकी एक सखी थी जिसका नाम सुशीला था। वह पूज्य माँ को बहुत प्यार करती थी। उस प्यार का यही अर्थ था कि उसे पूज्य माँ बहुत अच्छे लगते थे। यह हमारी मिथ्या कल्पना होती है कि हम दूसरे इनसान के बिना नहीं रह सकते। परन्तु जब परिस्थिति बदल जाती है तो मन में नव परिस्थिति के साथ साथ नव उमंग, नव तरंग का जन्म हो जाता है और मन नई परिस्थिति में खो जाता है। पुरानी बात तो उसे भूल ही जाती है। पूज्य माँ तो यह जानते थे परन्तु वह नहीं जानती थी। उसे तो बस इतना ही पता था कि उसे बहुत आसक्ति है।

दुर्भाग्यवश जब परीक्षा समाप्त हुई और परिणाम निकला, परीक्षा में पूज्य माँ तो उतीर्ण हो गये परन्तु उनकी सखी अनुतीर्ण हो गई। इस पर वह बहुत दुःखी हो गई। एक दुःख तो उसे परीक्षा में असफ़ल होने का था परन्तु उससे अधिक दुःख उसे पूज्य माँ से बिछुड़ने का था।

वह पूज्य माँ को बारम्बार यही कहने लगी कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। पूज्य माँ ने उसे बहुत समझाया परन्तु जब पूज्य माँ ने देखा कि उसे यह बात समझ में नहीं आ रही तो अब दूसरा रास्ता यही था कि अपने बीबी जी (पूज्य माँ के माता जी) को किसी प्रकार मनाया जाये कि वह भी उसी कक्षा में ही रह जायें। वह घर में जाकर अपने बीबी जी को मनाने लगे और कहने लगे, "बीबी जी! आठवीं कक्षा की परीक्षा में बैठने के लिए मेरे पास योग्यता नहीं

है, (उन दिनों आठवीं में बोर्ड की परीक्षा होती थी और पेपर भी बोर्ड की ओर से ही आते थे) सो मुझे यही उचित लगता है कि मुझे सातवीं कक्षा दोबारा करनी चाहिये ताकि जब आठवीं श्रेणी आये तब तक पढ़ाई की भूमि सुदृढ़ हो जाये।" इस प्रकार के वार्त्तालाप से बीबी जी अतीव प्रभावित हुए और पूज्य माँ की बात मान कर पाठशाला को चल पड़े।

उन दिनों परीक्षाओं के परिणाम घोषित हो रहे थे। साधारणतया सभी मातु और पितु अपने बच्चों का संदेश लेकर और परीक्षा में सफ़ल होने की सिफ़ारिश लेकर जाया करते थे। जब पाठशाला की मुख्याध्यापिका ने बीबी जी को आते हुए देखा तो उन्होंने यही अनुमान लगाया कि वह भी अपनी बेटी को पास करवाने की योजना लेकर पधारे होंगे।

वह पूज्य माँ के बीबी जी की सहेली भी थीं। परन्तु इन दिनों वह एक ही भाव में रह रही थीं कि प्रत्येक इनसान उनके पास अपनी अपनी सिफ़ारिश लेकर आता है। सो बीबी जी को देखते ही वह कहने लगीं, 'देखें! यदि आप अपनी बेटी के पास होने की सिफ़ारिश लेकर आई हैं तो मैं इस विषय में आपकी कोई सहायता नहीं कर सकती क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति इसी विषय में मेरे पास आता है।'

तब बीबी जी ने बतलाया कि वह पास होने की योजना लेकर नहीं आये बल्कि अपनी बेटी को फेल करवाने की अद्‌भुत योजना लेकर आये हैं। जब मुख्याध्यापिका ने यह सुना तो उनके आश्चर्य का पारावार न रहा। बीबी जी ने सारी बात समझा दी। तब पूज्य माँ अपनी सखी के लिये वापिस सातवीं कक्षा में आ गये।

कुछ ही दिनों के पश्चात् जैसा पूज्य माँ ने कहा था वैसे ही उस कन्या के मन के गुण प्रत्यक्ष रूप में सामने आने लगे। मन का यह नियम होता है कि वह बहुत देर तक दुःखी नहीं रह सकता। मन जिसे श्रेष्ठ समझता है वहीं खो जाता है पुरानी बात की याद नहीं रहती। मन के लिये यह भी आवश्यक नहीं है कि वह श्रेष्ठता को ही श्रेष्ठ समझे। उसे जो विषय पसंद आ जाता है उसके लिये वही श्रेष्ठ हो जाता है।

वह लड़की बदलने लगी। उसे अब एक और लड़की पसंद आने लगी। पूज्य माँ ने यह देख लिया। यदि पूज्य माँ के स्थान पर कोई और होता तो अवश्य ही दुःखी हो जाता। परन्तु वहाँ पर तो पूज्य माँ थे... जो यह भली प्रकार से जानते थे कि नये वातावरण में मन अवश्य ही बदल जाता है। जब वही चिन्ह दीखने लगे तो वह इसके लिये पहले ही तैयार थे। इसलिये किसी भी प्रकार का दुःख हो इस बात का प्रश्न ही नहीं था।

इसी के साथ एक गुण के और दर्शन हुए कि जिस लड़की को उनकी सखी पसंद करती थी, वह लड़की पूज्य माँ को पसंद करती थी। इस प्रकार से कहानी कुछ नया ही रूप ले रही थी। पूज्य माँ जी दोनों के गुण जानते थे। उन्होंने दोनों के मध्य में आकर दोनों की आपस में मैत्री लगवानी आरम्भ कर दी। जब उन दोनों की मैत्री घनिष्ठ हो गई तो पूज्य माँ वहाँ से चुपके से बाहर निकल आये। बस यही कहा जा सकता कि दो चाहने वालों को मिला दिया। सच ही माँ धन्य हैं। ❖

...माया रूप भी परम ने,
आप ही तो धराया है।

तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नभिजायते।
अन्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम्।।८।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - प्रथम खण्ड, ८ श्लोक

शब्दार्थ :

परब्रह्म संकल्परूप तप से उपचय (वृद्धि) को प्राप्त होता है; उससे अन्न उत्पन्न होता है। अन्न से क्रमशः प्राण, मन, सत्य (पाँच महाभूत), समस्त लोक और कर्म तथा कर्मों से अवश्यंभावी सुख-दुःख रूप फल उत्पन्न होता है।

तत्व विस्तारः

परम संकल्प ही तप रे है, संकल्प मात्र जग ब्रह्म का।
संकल्पात्मिका शक्ति ही, जान ले तप है ब्रह्म का।।१।।

माया संग सों ही तो यह, जग उभर रे आया है।
माया रूप भी परम ने, आप ही तो धराया है।।२।।

निर्गुण अव्यय नित्य तत्व, सगुण रूप रे धर आये।
परम तत्व वह आप ही, ईश्वर रूप रे धर आये।।३।।

माया खेल रचाने को, संकल्प वृत्ति चढ़ी रूप धरा।
माया सत्ता नहीं आपुनो, ब्रह्म सत्ता आधार भया।।४।।

सूक्ष्म सों अति सूक्ष्म जो, रूप स्थूल का पा जाये।
कहने को चाहे कह लो, जग उसमें समा जाये।।५।।

अन्न रचा फिर प्राण रचे, फिर मन को भी रचा दिया।
कार्य तन यह पंचभूत, समस्त लोक रचा दिया।।६।।

संकल्प ही कारण तन कह लो, प्राण मन सूक्ष्म कहो।
अन्न पंचमहाभूत कहो, स्थूल तन रे तुम कहो।।७।।

कर्म रचे फिर फल रचे, ब्रह्माण्ड चक्र रे चल पड़ा।
संकल्प मात्र सों जान लो, जहान चक्र रे चल पड़ा।।८।।

निज माया के आसरे, अखण्ड खण्डित सा हुआ।
अपने भाव के आसरे, पूर्ण जग रे यह रचा।।९।।

कारण सूक्ष्म स्थूल भया, उत्पत्ति स्थिति लय भया।
उपाधि रहित अद्वैत तत्व, उपाधिन् सों आवृत हुआ।।१०।।

कल्पना में ही नाम रूप, माया ने रे रच दिये।
कहने को जो भी कहो, अज्ञान में ही रच दिये।।११।।

मायिक माया ने जो रचे, रच कर कुछ भी न रचे।
स्वप्नाकार वृत्ति सम ही, जग स्वप्न रे वा ने रचे।।१२।।

अन्न अर्थ माया ही लूँ, भाव रूप देह वही भये।
नाम रूप जो देख रहे, सर्व रूप वही तो धरे।।१३।।

अन्न आकाश ही रे कहूँ, पूर्ण भूत का अन्न है वह।
सम्पूर्ण जग भक्षणकर, प्राण जन्मदे भी है वह।।१४।।

ईश्वर शक्ति सों जानो, ब्रह्म कल्प आरम्भ हुआ।
सगुण ब्रह्म ही सृष्टि का, परम कारणा आप हुआ।।१५।।

सर्वप्रथम उस माया ने, जान ले प्राणा रचे।
ब्रह्मा इसको चाहे कह लो, प्राकृत भी हों चाहे रचे।।१६।।

कर्म चक्र रे चल पड़ा, अमृत चक्र रे कहते हैं।
ज्ञान अग्न सों दग्ध हो, विनशे यही यह कहते हैं।।१७।।

माया खेल आरम्भ हुआ, यह तो चलता जायेगा।
परम सत्त्व जो जान ले, माया परे हो जायेगा।।१८।।

स्थूल सूक्ष्म रूप सभी, मायिक है माया में है।
परम कहूँ यूँ रूप धरे, पर सब माया में ही है।।१९।।

संकल्प के आसरे वह रचे, स्वप्न वृत्ति ज्यों स्वप्न भये।
संकल्प मात्र है तप उसका, कहना है चाहे कह लो।।२०।।

एकाग्रता ही संकल्प कहो, ध्यान को संकल्प कहो।
अज्ञान से प्रदुर रे हो, अज्ञान ही संकल्प कहो।।२१।।

परम सूक्ष्म देख ज़रा, स्थूल रूप धरी आये है।
अद्वैत तत्व अखण्ड रस, विभाजित सा दर्शाये है।।२२।।

बार बार वह यही कहें, जो है सब बस राम है।
अखण्ड तत्व अद्वैत तत्व, बस राम राम इक राम है।।२३।।

बाह्य रूप जो देखे हैं, उत्पत्ति सब राम है।
अन्नमय जिसे कहते हैं, पूर्ण ही वह राम है।।२४।।

फल वृक्ष और फल भी, बीज रूप वह राम है।
कहने को जो भी कहो, जो है सभी तो राम है।।२५।।

विश्व रूप विराट रूप, अनेक रूप जो दर्शाये।
अखण्ड रस वह एक तत्व, विभाजित सा जो दर्शाये।।२६।।

बार बार यही कहते हैं, बस सब कुछ वह राम है।
अनेक कर्म जग में होयें, पर कर्म रूप भी राम है।।२७।।

देख सखी कर्म गति, उत्पत्ति कारण कहते हैं।
कर्म जन्में और कर्म मरें, देख यहाँ पर कहते हैं।।२८।।

अमृतमय है जन्म वह, सतो तत्व भी जान लिया।
अवश्यंभावी फल यह दे, सुख दुःख को रे जान लिया।।२९।।

कर्म बीज से ही जन्मे, स्वभाव प्रदुर रे होता है।
स्वभाव से ही जान लो, जग प्रकट रे होता है।।३०।।

कारण सूक्ष्म स्थूल कहा, महा कारण वह ही है।
पूर्ण जो है देख रहा, करे धारण बस वह ही है।।३१।।

या यूँ कहदूँ ब्रह्म से, क्योंकर स्थूल में आ जाये।
राज़ यहाँ पर कहते हैं, जग क्योंकर रे दर्शाये।।३२।।

स्थूल में साधक तू पहुँचे, बाह्य सों तेरा संग हुआ।
देख यहाँ पर कहते हैं, कहाँ से तव आगमन हुआ।।३३।।

परब्रह्म वह प्रथम कहें, फिर कहें संकल्प हुआ।
वृद्धि वह ही पा गया, पंचभूत रे वही भया।।३४।।

प्राण भये फिर मन भया, समस्त लोक फिर बन गया।
कर्म चक्र फिर स्वतः ही लो, पूर्ण जग का बन गया।।३५।।

महा मौन से मौन हुये, मौन से ध्यान में आ गया।
ध्यान से उठकर मन में आ, मन से तन में आ गया।।३६।।

उत्पत्ति का सार वह, देख यहाँ पर ध्याते हैं।
किस विध रे क्योंकर रे, जन्म जहान में पाते हैं।।३७।।

कर्म चक्र रे चल पड़ा, कर्मफल फिर आप भया।
बीज अवस्था में ही वह, कारण में रे लय हुआ।।३८।।

कारण से पुनः उभरा, सूक्ष्म रूप वा ने धरा।
सूक्ष्म से फिर जग रचा, स्थूल रूपा वा में पड़ा।।३९।।

यह सब बतियाँ जान करी, राम मेरे मेरा क्या होगा।
स्वप्न की बतियाँ जान करी, क्षणिक जान के क्या होगा।।४०।।

परम सत्त्व तो हो करी, उसको तुम बताओ रे।
स्वप्न जग में राम रे, अब कह दूँ क्यूँ भरमाओ रे।।४१।।

२४-८-६१

श्रीमद्भगवद्गीता...

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढ़ा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ।।१०।।

श्रीमद्भगवद्गीता १५/१०

शरीर को धारण करने, उपभोग करने व छोड़ने को कौन लोग देख सकते हैं? इसके विषय में यहाँ भगवान कहते हैं कि :

शब्दार्थ :

१. (देह) से निकलते हुए,
२. (देह में) स्थित हुए और
३. गुणों से युक्त हुए को भी,
४. मूढ़ नहीं देखते,
५. ज्ञान के नेत्रों वाले देखते हैं।

तत्व विस्तार ;

जीव गुण खिलवाड़ देखते हुए भी नहीं देखता। नन्हूँ! देख न! जीव रोज़ लोगों को,

...'भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन'

१. जन्म लेते व मरते देखता है।
३. गुणों से युक्त हुआ देखता है।
४. गुणों को भोगते हुए देखता है।
५. उनके अपने ही गुणों एवं औरों के गुणों से विरोध देखता है।
७. आकर्षण देखता है।
८. औरों के गुणों पर प्रभाव देखता है।

फिर, जीव यह भी देखता है कि उसका गुणों पर वश नहीं है। किन्तु यह सब कुछ देखता हुए भी :

क) जीव कुछ नहीं देखता।
ख) जीव कुछ देखना ही नहीं चाहता।
घ) सच तो यह है कि वह अपने आपको जानना भी नहीं चाहता, वह सच से डरता है।
ङ) सच को सच जान कर भी वह सच मानना नहीं चाहता।
च) क्योंकि यदि सच को सच मान लेगा

तो उपाधि रूपा 'मैं' बेचारी किधर जायेगी?

ज्ञान नेत्र तथा मूढ़ की दृष्टि का आधार :

इसलिये भगवान कहते हैं कि स्थूल दर्शन की बात नहीं है, स्थूल दर्शन तो सबको होते हैं। जीव का दृष्टिकोण विषय के अर्थ तथा मूल्यों पर आधारित है।

नन्हूँ! जब यह नेत्र मन के राही देखते हैं तब नेत्र मन के होते हैं। जब नेत्र ज्ञान के राही देखते हैं तब नेत्र ज्ञान के होते हैं। जिसका दर्शन हो, उस विषय में ज्योति अर्थ की होती है, सोचो, वह अर्थ किसने दिया!

आपके लिये विषय का जो मूल्य होगा, उस पर वह अर्थ आधारित है। तनो संगी विषयासक्त के लिये प्रेम का अर्थ कुछ और है, तनत्व भाव त्यागी निरासक्त के लिए प्रेम का अर्थ कुछ और ही होगा।

इसी विधि मूढ़ और ज्ञानवान के लिये जन्म-मरण का अर्थ भी भिन्न होगा। इन दोनों की समझ भी फ़र्क़ होगी।

ज्ञान के नयन से देखो, उदासीन होकर देखो तो आत्म राज़ समझ आ जाता है। नित्य निर्लिप्त तथा निर्विकारी दृष्टि से देखो तो जन्म-मरण का चक्र भी गुण खिलवाड़ ही नज़र आयेगा। आत्मा और कर्मबीज का मिलन भी गुण खिलवाड़ ही है।

नन्हूँ! यदि आप आत्मा की बात समझ जायें तो,

१. आप जीवन को गम्भीर समस्या नहीं मानेंगे।
२. आप जीवन के प्रति मुसकुराते रहेंगे।
३. आप अपने पर ही स्वयं मज़ाक कर सकेंगे।
४. आप अपने ही तन, मन तथा बुद्धि को एक मनोरंजन का विषय ही मानेंगे।
५. आप अपने बारे में चिन्ताशील नहीं होंगे।
६. जिस तन को आपने छोड़ ही देना है, उसकी क्या परवाह करनी!
७. जो तन आपका है ही नहीं और जो आप हो ही नहीं, उसमें आपका संग क्यों?

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ।।११।।

श्रीमद्भगवद्गीता १५/११

भगवान कहते हैं, देख अर्जुन!

शब्दार्थ :

१. यत्न करने वाले योगी जन,
२. अपने में इस आत्मा को स्थित देखते हैं,
३. परन्तु अशुद्ध चित्त वाले अविवेकी पुरुष,
४. यत्न करते हुए भी इसको देख नहीं पाते।

तत्व विस्तार :

कहते हैं, योगी जन यत्न करते हुए इस सत् को अपने में देख सकते हैं, क्योंकि :

१. योगी जन आत्म तत्व में स्थित रहते हैं।
२. वे परम से योग लगाये होते हैं।
३. वे परम स्वभाव जीवन में लाने के यत्न कर रहे होते हैं।
४. वे परम सदृश मौन होते जाते हैं।
५. वे परम सदृश उदासीन होते जा रहे हैं।
६. वे परम सदृश सबके लिये सब कुछ किये जा रहे हैं।
७. वे परम सदृश अपना तन, पूर्ण शक्तियों

सहित जग को दे रहे हैं।

८. वे परम सदृश यज्ञ कर रहे होते हैं।

९. वे परम सदृश मौन रह कर, तप कर रहे होते हैं।

इस कारण वे परम तत्व को जान लेते हैं। वे व्यक्तिगत 'मैं' को भूले होते हैं।

वे परम प्रेम में खोये हुए :

क) अपना तन, मन, बुद्धि परम को ही दिये जाते हैं।

ख) आशा को भी भूल जाते हैं, क्योंकि परम की रज़ा ही उनकी एकमात्र आशा रह जाती है।

ग) चाहना और रुचि को परम चरण में धर आते हैं।

घ) संकल्प-विकल्प क्या करें, जब चिन्ता की बात ही नहीं रही। मानो अब चिन्ता उनकी भगवान करते हैं।

ङ) शुभ-अशुभ की भी बात नहीं रह जाती, क्योंकि वे तनत्व भाव छोड़ रहे होते हैं।

ये सब तब हुआ, जब परम के प्रेम में खो गये।

अन्य साधकगण यत्न करते हुए भी देख नहीं पाते क्योंकि उनका चित्त अशुद्ध है। वह अशुद्ध चित्त क्या है, समझ लो!

चित्त अशुद्धि :

देख! सबसे बड़ी अशुद्धता 'मैं' है, सबसे बड़ी अशुद्धता 'संग' है। 'मैं' और 'संग' एक ही बात समझ लो। 'मैं' शब्द तनोसंग के साथ सप्राण हो जाता है। फिर, व्यक्तिगतता का जन्म होता है। परम आवरण, मूल मल 'मैं' है। मूल अशुद्धि यह ही है।

चित्त अशुद्धि परिणाम :

१. जब लौ तन, मन, बुद्धि प्रधान है,

४. जब लौ 'मैं' व संग प्रधान है,

चित्त में जो भी है, अशुद्ध है।

ऐसे जीव जीवन में,

क) जो कुछ भी सोचते व करते हैं,

ग) जो कुछ भी भोगते हैं

घ) जो कुछ भी बोलते व छुपाते हैं,

च) जो कुछ भी देखते व जानते हैं,

उनमें स्वार्थपूर्ण 'मैं' निहित है।

जो गुण कहीं भी दिखते हैं, उन्हें भी अपने लिये ही चाहते हैं। जो गुण अपने में पाते हैं, वे सब केवल अपने लिये ही इस्तेमाल करते हैं।

अशुद्ध चित्त पूर्ण का व्यवहार :

अशुद्ध चित्त पूर्ण लोग,

- आसुरी गुण प्रधान होते हैं।
- अज्ञान तथा प्रमाद पूर्ण होते हैं।
- कामना तथा लोभ पूर्ण होते हैं।
- केवल अपने भोगैश्वर्य में लगे रहते हैं।

नन्हूँ! अशुद्ध चित्त वाले लोग दूसरों को इन्सान नहीं मानते। वे तो केवल अपनी और अपनों की स्थापना में नित्य प्रवृत्त रहते हैं। वे तो अपने अभिमान में डूबे रहते हैं। वे किसी को कोई सुख नहीं देते। वास्तव में वे सबको दुःख ही देते हैं। भगवान ने यज्ञ, तप, और दान की विधि कही है, जो ऋषिगण को भी पावन करने वाली है; किन्तु अशुद्ध चित्त वाले लोग तो निष्काम कर्म करते ही नहीं।

१. वे तो अपने स्वार्थ को पल भर के लिये भी नहीं भूलते।

२. वे परम तत्व को नहीं जान सकते।

३. वे जन्म-मरण के चक्र को नहीं समझ सकते।

४. वे यत्न करते हुए भी आत्मसाक्षात्कार नहीं कर सकते।

नित्य निरासक्त योगी जन ही तत्व सार समझ सकते हैं, क्योंकि उनका चित्त शुद्ध होता है। वे गुण खिलवाड़ को दूर से देख

सकते हैं, इस कारण वे जन्म-मरण के राज़ को भी समझ लेते हैं।

नन्हूँ! वे जानते हैं कि :

क) संग ही बीजों को पकाता है।

ख) संग ही बीजों में पुनः जन्म की शक्ति भरता है।

ग) जीवात्मा में भी परम का अंश ही मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों को चेतन बनाता है।

घ) ज्यों परम की प्रकृति त्रिगुणात्मिका शक्ति के आसरे सृष्टि रच देती है, त्यों उस अंशी के अंश के आसरे, मन, बुद्धि और इन्द्रियाँ भी पुनः नव तन रच लेती हैं।

ङ) बच्चू! चेतन अंश होने के कारण, 'मैं' में बीज को मानो पुनः सप्राण करने की शक्ति है।

आत्मा के गुण जीवात्म तत्व में निहित हैं और जीवन का हर कर्मबीज भी गुणपूर्ण है। इन गुणों के मिलन के पश्चात् नव जन्म का होना भी गुण खिलवाड़ ही बन जाता है। ये बातें कोई योगी ही ज्ञान नेत्रों से देख सकता है और अनुभव सहित समझ सकता है।

यदि जीव ज्ञानवान होगा तो,

१. उसका हर कर्म निष्काम होगा।

२. उसकी हर नज़र भक्तिपूर्ण होगी।

३. उसका हर वाक् ज्ञानपूर्ण होगा।

४. उसका जीवन अध्यात्म का प्रमाण होगा।

तब ही इस तत्व सार को समझ सकेगा।

नन्हूँ! यहाँ भगवान ने साधकों को एक बड़ी भारी चेतावनी दी है। इसे पुनः समझ ले!

भगवान ने कहा, कि जो 'अकृत' है वह आत्मा को नहीं जान सकता।

जो 'अचेतसः' है, वह आत्मा को नहीं जान सकता।

भगवान ने स्पष्ट कहा है कि ऐसे लोग चाहे उम्र भर प्रयत्न करते रहें, वे आत्मा को नहीं जान सकते।

अकृतात्मा :

पहले 'अकृत' का अर्थ समझ ले :

१. जिसने कोई काम न किया हो।

२. जिसने काम अधूरे छोड़े हों।

३. नाते होते हुए भी जो उन्हें न माने।

४. जो करने योग्य को न करे व असफ़ल हो।

अकृत आत्मा, अज्ञानी, ब्रह्म के स्वरूप से भिन्न मूर्ख तथा असंतुलित मस्तिष्क वाले को कहते हैं। यानि,

क) विरोधात्मक कार्य करने वाला अकृतात्मा है।

ख) विरोधात्मक पथ का अनुसरण करने वाला अकृतात्मा है।

घ) अपने कर्तव्यों से विमुख होने वाला अकृतात्मा है।

अचेतस :

नन्हीं! अब 'अचेतस' को समझ ले,

१. विचार शक्ति के रहित।

२. तर्क शक्ति के रहित।

३. चिन्तन शक्ति रहित।

४. जड़वत् जीव।

५. मूर्छित सा हुआ जीव।

सो नन्हीं! यहाँ भगवान स्पष्ट कह रहे हैं कि,

क) अकृतात्मा बन कर, करने योग्य कर्तव्यों से पलायन करके, आप आत्मा को नहीं जान सकते।

ख) अपनी विचारशक्ति तथा बुद्धि को त्याग कर आप आत्मा को नहीं जान सकते।

ग) लाख मौन होने के प्रयत्न कीजिये, बिना सुकृत तथा सुचेत बने आप आत्मा को नहीं जान सकते। सो,

- जीवन में शुभ कर्म करने ही पड़ेंगे।
- जीवन में निष्काम कर्म करने ही पड़ेंगे।
- जीवन में यज्ञमय कर्म करने ही पड़ेंगे।

यदि यह नहीं करोगे तो आत्मा को नहीं समझ सकते। ❖

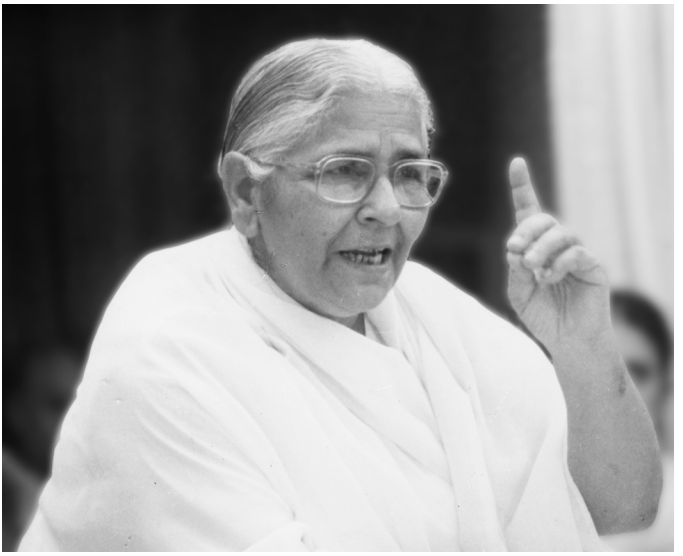

साधना के लिए आवश्यक – अंतर्मुखता

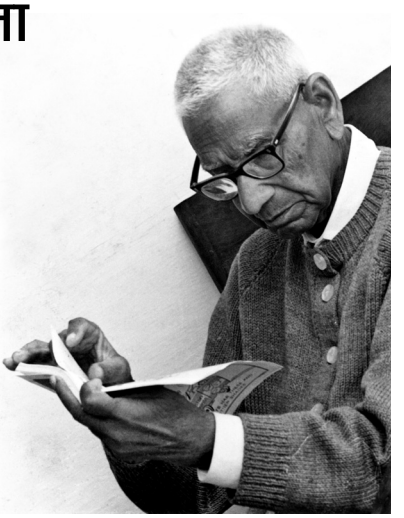

परम पूज्य माँ के पिता जी सी एल आनन्द

पिता जी -

साधना क्या है और कैसे हो? अंतर्मुखी किसे कहते हैं? मन कहता है, 'साधना की ज़रूरत नहीं, तुम श्रेष्ठ हो।' बुद्धि से पूछा जाता है तो बुद्धि अहंकार, मोह और अज्ञानता से भरी हुई है, वह भी निर्णय नहीं कर सकती।

ऐसा लगता है कि जब तक भगवान की कृपा न हो तब तक साधना आरम्भ न होगी। भगवद् कृपा पाने के लिए साधक क्या करे?

प्रश्न अर्पण -

साधना क्या है कैसे हो, अंतर्मुखी किसे कहते हैं।
मन कहे तुम बहु श्रेष्ठ हो, बुद्धि राह अहं में बैठे हैं।।१।।

अज्ञानता कारण हम समझें, निर्णय कर नहीं पा सकें।
भगवद् कृपा बिन कुछ न हो, कहो विधि कृपा जो पा सकें।।२।।

तत्व ज्ञान

साधक चेष्टा है साधना, सर्वोत्तम साध्य पाने को।
महा यत्नशील भये, वांछित फल वह पाने को।।३।।

फलोत्पादक निपुण पटु, कार्य सिद्धि की ओर बढ़े।
साधना इसे ही जानिये, सत् पूर्ति को जो यत्न करे।।४।।

साध्य उपलब्धि अर्थ ही, अनुसरण पथ है साधना।
परम सिद्धि पाने की, आराधना ही है साधना।।५।।

श्रेष्ठ केवल है पुरुषोत्तम, बाक़ी सब न्यून ही है।
श्रेष्ठतम गुण साध्य भयें, प्राप्तव्य विधि साधना है।।६।।

लक्ष्य प्रथम निश्चित होये, वा तत्व बोध ज्ञान है।
तत्पश्चात् प्राप्तव्य विधि, अनुसरण ही तो विज्ञान है।।७।।

गुण याचक प्रथम निजी, गुण अनुमान लगाये है।
आधुनिक आंतरिक अपने ही, स्थित गुण दर्शन चाहे है।।८।।

जो गुण निज में माने है, क्या हैं तुझमें मन देख सही।
सुंदर सुडौल उज्ज्वल चेहरा, छिपी क्रूरता पाछे देख सही।।९।।

मुखड़े पाछे अंतर दर्शन, अंतर्मुखी ही कर पाये।
विवेकपूर्ण निष्पक्ष बुद्धि, ही निज दर्शन कर पाये।।१०।।

निर्णय तब ही ले सके, जब निर्णयात्मिका शक्ति हो।
सत्त्व जीत ही तब पाये, सतोगुण प्रति गर भक्ति हो।।११।।

अवस्था है वातावरण है, ज्ञान भी तव अनुकूल है।
अहं कृपा अब चाहिये, राम कृपा भरपूर है।।१२।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

सुन तू मना सुन तो ज़रा, साध्य क्या है देख तो ले।
राम को तूने पाना है, राम सामने देख तो ले।।१३।।

गीता में जो भी कहा, है श्याम प्रमाण देख ले।
हर शब्द से जीवन में तुले, सत्य राम यह देख ले।।१४।।

राम तत्व से प्रीत तुझे, या वा स्वरूप तूने पाना है।
अपने आप को भूल करी, एकरूप हो जाना है।।१५।।

तुम जानो गुण राम के, जीवन में जो प्रकट हुए।
गर वह गुण तोरे साध्य हैं, साधना सिद्ध उन्हें कर दे।।१६।।

अंतर जा के अपने को, आप तोल के देख ले।
मन बुद्धि जग प्रति स्थिति, जो तेरी है उसे देख ले।।१७।।

धैर्य धृति निज दया धर्म, सहनशीलता देख ले।
विनम्र भाव मनोशुद्धि, विशालता निज देख ले।।१८।।

गम्भीर कितना मन तेरा, करुणा कितनी तुझमें है।
सत्यता संग उदारता, अधिकार वृत्ति भी तुझमें है।।१९।।

श्रेष्ठ जो निज को माने है, किस गुण बल पे कहते हो।
झुकाव कहाँ तेरा मोह कहाँ, उदासीनता निज देख लो।।२०।।

आत्मसंयम कितना है, कहाँ पे संग रे तेरा है।
किस मान्यता ने मना, चहुँ ओर से तुझको घेरा है।।२१।।

अंतर्मुखी निज बुद्धि, को भी आप ही निरखेगा।
स्थितप्रज्ञ के चिह्न से, अपने आप को परखेगा।।२२।।

बोध शक्ति वहाँ कितनी है, ग्रहण शक्ति वहाँ कितनी है।
सत् दर्शन सत् समर्थन, न्याय शक्ति वहाँ कितनी है।।२३।।

क्या मन विचलित हो जाता है, उद्विग्नमनी हो जाता है।
क्या भय भी उठी आता है, क्रोधोन्मत्त हो जाता है।।२४।।

चाहना संग लग्न कारण, सत्य देख नहीं पाता है।
रुचिकर छूट ही न जाये, सत् तू देख न पाता है।।२५।।

बुद्धि कैसी है देख ले, निर्णयात्मिका शक्ति जो।
निरपेक्ष अपने प्रति, होई के निर्णय कर सको।।२६।।

हानि लाभ तोरा अपना हो, अपमान मान कुछ भी मिले।
राम स्वरूप ही प्रिय लगे, अनुकूल ही तू न्याय करे।।२७।।

'मैं' की कोई बात न हो, प्रेम से प्रेम ही हो जाये।
अमर अखण्ड प्रेम रहे, अपना प्राण भी मिट जाये।।२८।।

दैवीगुण मन राम गुण, ही व्यय वह करता जाये।
जो भी द्वार पे वा आये, भंडार गुणों का वह पाये।।२९।।

उसे कुछ भी मिले न भी मिले, वह तो देता जायेगा।
प्रतिरूप में कुछ माँगे न, वह दाता बन जायेगा।।३०।।

अंतर जा के देख ले, भाव तुम्हारी कैसी है।
भावना भी तुम्हारी जो, क्या तुझे कहती रहती है।।३१।।

झुकाव तुझे क्या प्रिय लगे, या बुद्धि पे निज नाज़ है।
गुण प्रभावित तुझे करें, या गुण से परे तू आप है।।३२।।

अंतर्मुखी ही जान सके, अंतर्मुखी ही समझ सके।
अपना आप पहचान सके, साचो साधक तब ही भये।।३३।।

निरपेक्ष होई के आपुनो, स्वरूप वह निहारे है।
न्यूनता ख़ुद में देख करी, राम को वह पुकारे है।।३४।।

उतनी दूरी माने वह, गुण रूप जितना न हो।
एकरूपता राम से, जाने आंतरिक स्थिति रे हो।।३५।।

हुआ तन से परे तब जाने, जब तन चाकर सब का भये।
मन से उठा तब पहचाने, जब मान अपमान से हो परे।।३६।।

बुद्धि सत् टिकी वह तब माने, जब बुद्धि सत्यता न छोड़े।
वा बुद्धि कोई ठुकराये, निज बुद्धि से वह संग तोड़े।।३७।।

अपने प्रति वह स्थिर रहे, दूजे प्रति झुक जाता है।
आप तो सत् में स्थित रहे, दूजे तद्रूप हो जाता है।।३८।।

क्योंकर इसको जान सकें, क्योंकर साधना हो सके।
अंतर की यह बातें हैं, यह अंतर में ही हो सकें।।३९।।

पूजा अंतर में होनी है, उपासना वहीं पे होनी है।
प्रार्थना जिसे कहते हो, वह भी वहीं पे होनी है।।४०।।

आर्त भाव पुकार भी, आरती वहीं पे होनी है।
साधक साध्य मिलन भी तो, देख वहीं पे होनी है।।४१।।

चित्त शुद्धि भी आंतरिक है, बुद्धि स्थिति भी आंतरिक है।
मनोस्थिति भी आंतरिक है, गुण स्थिति भी आंतरिक है।।४२।।

आंतरिक ही सब खेल है, बाक़ी सब ही बातें हैं।
आंतरिक जिसे न चाहिये, जानो शब्द बस घातें हैं।।४३।।

विज्ञान जान तू मन मेरे, हक़ीक़त राम बनाना है।
'मैं' ने ही 'मैं' को तजी, राम में लय हो जाना है।।४४।।

ज्ञान चाही या वा स्वरूप, इसका निर्णय प्रथम करो।
साध्य कौन तुम्हारा है, साधक इसको देख तो लो।।४५।।

ज्ञान गुमान न दे सके, ज्ञान तो नित्य झुकायेगा।
गर स्वरूप की चाहना है, पल पल झुकता जायेगा।।४६।।

गर केवल ज्ञान की चाहना है, अहं ही बढ़ता जायेगा।
अहंकार जितना बढ़े, स्वरूप दूर हो जायेगा।।४७।।

साध्य स्वरूप बनाइये, अंतर्मुखी हो जाइये।
अपने प्रति तब ही तो, उदासीन हो पाइये।।४८।।

इससे न्यून गर चाह तेरी, साधना तुम कहें छोड़ दो।
राम का नाम मत तुम लो, नाता उस से तोड़ दो।।४९।।

२३.१०.१९६६

❖ ❖ ❖

मन्दिर में रहते हो भगवन
कभी बाहर भी आया जाया करो
मैं रोज़ तेरे दर आता हूँ
कभी तुम भी मेरे घर आया करो...

श्रीमती पम्मी महता

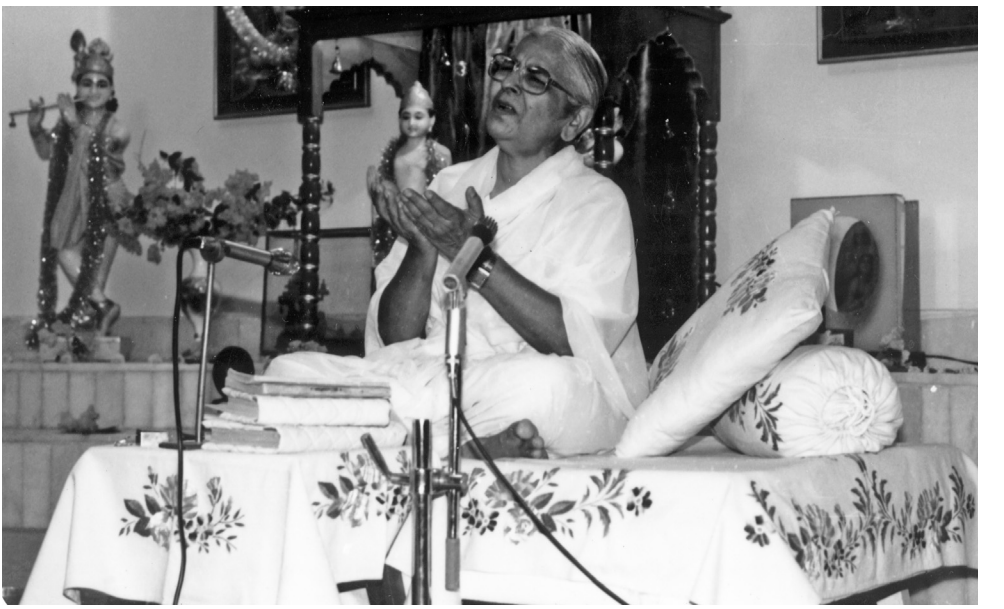

हृदय के ये उद्‌गार जो मैं अक्सर गुनगुनाती रहती थी, मुझे बहुत ही भाते थे। जिन्होंने भी यह गाये थे अवश्य ही वह भगवान के भक्त ही रहे होंगे! परम पूज्य माँ का आशीर्वाद उन्हें सदा प्राप्त रहे! जब यही उद्‌गार मेरे मन में भावपूर्ण होने लगते तो मैं आत्मविभोर हो उठती।

कभी-कभी हृदय को वह अलफाज़ नहीं मिलते, जिन राही अपने भाव व्यक्त कर पाऊँ... मगर कई बार अन्य के भावों की अभिव्यक्ति अपने भावों को इस क़दर रंग लेती है कि अपने

ही भावों में सध जाते हैं वह मधुर गान! बस यही हुआ मेरे साथ भी! माँ अक्सर कहा करते थे 'हर दिल जो प्यार करेगा, वह गाना गायेगा...' कितनी सत्यता है कवि के इन शब्दों में!

सच पूछिये, मुझे तो गाना आता ही नहीं। मगर जब प्रेमविभोर हो उठता यह मन, तो उद्गारों का प्रवाह अपने माँ प्रभु जी के चरणों में बड़ी ही ख़ामोशी से बह जाता... छलछलाता हुआ अंतरमन कहीं न कहीं, कुछ न कुछ कह उठता!

अपने प्यार का इज़हार करने के लिए अव्यक्त भाव सहज ही व्यक्त हो जाते हैं। यूँ ही मेरी दासतां के पन्ने भी अपनी मुहब्बत के लिये भर जाते! कहते हैं न, भगवान का दूसरा नाम मुहब्बत है! यही इबादत भी है! भाव प्रवाह यूँ ही प्रवाहित हो जाते। यह भी पता नहीं चलता कि कब क्या कह गये...

आप माँ को तहेदिल से घर आने का न्योता दिया, तो कृपा के सागर आप माँ ने हर अपने क़दम राही मेरे साथ-साथ चलना शुरु कर दिया। यूँ तो पहले दिन से ही चल रहीं थीं मेरे लिये आप माँ, मगर मैं अपने से अलग मान कर आपको देखा करती थी। जब ज़हन पे उतरते तो दर्शन तो होते क्योंकि यह तो साफ़ नज़री आ रहा था कि आप मेरे संग चल रहे हैं... फिर रफ़्ता-रफ़्ता चलते हुये एहसास भी होने लगा व आपके क़दम आप ही से पाई आपकी रोशनाई से अंतर में नज़री आने लगे!

आप ग़रीबनवाज़ ने तो इसे इस क़दर अपना कर, प्रथम मिलन में ही अपने चलते क़दमों की आहट सुनानी शुरु कर दी थी। उसी दिन से ही तो आप मेरे मनमन्दिर रूपी घर में आते-जाते रहते... सच तो यह है, जब तलक अंतर मन ने आपको पूरी तरह क़बूल नहीं कर लिया, आप मेरे घर में स्थाई रूप से कैसे प्रवेश करते! हम जगह दें पूर्णतया, आपको स्वीकार करने के बाद, आप तभी आते हैं। अन्यथा आप अपनी झलक दिखला कर छुप जाते... मैं इत उत ढूँढती ही रह जाती आपको! जैसे ही मेरा चित्त स्थिर हो गया आप में, तभी आप अंतर में आ पाये! जब तलक 'मैं' का घर बना रहा, आप दस्तक देई चले जाते।

आप अनन्त तो धैर्य की मूर्त हैं। किस तरह और कितनी देर आपको इंतज़ार करवाया... अब जब पीछे मुड़ कर देखती हूँ तो हर आपका सत्य नज़री आता है। सच माँ, आपका कोई सानी नहीं इस जगती में। आप इंतज़ार करते रहे कि कब इस हृदय के पट खुलें और आप प्रवेश पायें। धन्य तो आप हैं, जिन्होंने चुपके-चुपके इस मन को मनमन्दिर बनाना शुरु कर दिया।

अंतर की सारी मलिनता धुलती चली गई क्योंकि धोने वाले आप जो थे! कोई बाह्य सजावट नहीं थी जो नज़री आती। इस लेन देन में 'मैं' जो नहीं थी, दोनों आप ही तो थे। आप ही अपनी अमर प्रीत को बहाये चले जा रहे थे और इसके मन को स्वच्छ व निर्मल निरन्तर किये जा रहे थे।

आप ही के करम से आप पर से मेरी निगाह उठती ही नहीं थी... क्योंकि इधर-उधर, कहीं और इसे देखने की फ़ुरसत ही कहाँ थी! इस मन को मन्दिर बनाने के बाद ही आपका इसमें प्रवेश हुआ! धन्य-धन्य हो गई यूँ आपसे! आप ही को माँ, नतः श्री बारम्बार होते हुये इस परम सत्य में आ आत्मविभोर हो उठी!

हे भगवान, आप तो चलते-फिरते मन्दिर हैं! कहाँ है आप केवल मन्दिर की ही मूर्त... वह भी पत्थर की... नहीं! नहीं! यह कतई सत्य नहीं! फिर यह भेद भी सामने आया कि सगुणवेश में धरती पर अवतरित होने का व आपके जीवन का प्रयोजन क्या है? कैसे-कैसे हम मानस की जात, आपको पत्थर की मूर्त में स्थापित करी क्या-क्या ज़ुल्म नहीं ढाते आप पर? जो आपके क़ाबिल भी नहीं, वही हम आपको देते जाते हैं...

आप किसी से कुछ माँगते नहीं, बस आपका इस्तेमाल किया जाता है। सगुणवेश में आकर ही आप करुणा के सागर हम पर करुण-कृपा करी, हमारी सच्चाई से हमें अवगत कराते हुये सही दिशा की ओर चलने की प्रेरणा देते हैं। यह कोई लेन देन का व्यापार नहीं। यह तो असीम श्रद्धा व भक्ति भाव से अर्पित व समर्पित होकर आपकी वाणी को उठाने का समय है।

आपने तो अपने जीवन से हमारे जीवन की परिभाषा ही बदल दी जो असीम सात्विक व निर्मल तथा निरअहंकारता से सुसज्जित है। जीवन रूपी दामन पर 'मैं' के, कोई पैबन्द नहीं... वहाँ तो आपकी ज्योत्सना व आपके नाम की चुनरिया है जो आपने ओढ़ा दी थी मुझे!

याद पड़ता है, जब एक बार आप डलहौज़ी से आते हुये मेरे पास कुछ पल को ठहरे थे... मेरे को आपने अपने हाथों से एक शॉल ओढ़ा कर कहा था, "पम्मी, तुझे राम नाम की चादर ओढ़ा रही हूँ। इसे कभी मैली मत होने देना!" यह कह कर आपने इतने प्यार से अपनी आग़ोश में समेट लिया, जैसे उस प्रतीक रूप शॉल में भरकर आशीर्वाद दे दिया हो।

"फ़िक्र न करना, मैं तेरे अंतर में इस नाम की लाज रखूँगी!" यह सुनकर धन्य-धन्य हो गई थी मैं, उस प्यार और आपसे पाये आश्वासन से! आत्मविभोर हो गई थी मैं! कैसे-कैसे आपने इस पर अपना प्यार लुटा-लुटा कर इसे धन्य-धन्य किया हुआ है। आपके प्यार के इस Aura (वातावरण) में कितनी सुरक्षित रहती हूँ यह तो मेरा रब ही जानता है!

असीम कृतज्ञता व श्रद्धा से यह अंतर भरा रह कर आपकी चरण-रज सीस चढ़ाते हुये आपको विनम्र नमन देती हूँ - असीम।

श्रद्धा व प्यार से आप ही की

पम्मी

❖ ❖ ❖

भक्त ज्योति पंत

भगवान अतीव दयालु हैं! बारम्बार जन्म लेकर वह अपने भक्तों में नाम की लग्न के प्रकाश को प्रकाशित करते हैं। उन्हीं की कृपा के फलस्वरूप हमें प्रेरणा मिलती है और हमारे जीवन में नाम की ज्वाला प्रज्वलित हो उठती है।

भक्तों की गाथायें सदैव से ही प्राणीमात्र के मन को लुभावनी लगती हैं, जिन्हें सुन कर मन गदगद हो कर पुकार उठता है :

'राम मुझे तू भक्ति दे, भक्ति में वह शक्ति दे।
तोरे चरण में पड़ी रहूँ पिया, तीव्र चरण अनुरक्ति दे।।'

महाराष्ट्र प्रांत के सतारा ज़िले के एक छोटे से गाँव में गोपाल पंत नामक एक निर्धन ब्राह्मण भक्त रहा करते थे। वह गाँव के बालकों को पढ़ा कर जीवन निर्वाह किया करते थे। पढ़ाने में अतीव रुचि के परिणामस्वरूप, जिसे भी पढ़ाते वह उत्तम कोटि का विद्वान बन जाता। ऐसा प्रतीत होता कि वह उसकी नींव में दृढ़ता भर देते। प्रायः उनके पढ़ाये हुए शिष्य सर्वोच्च विद्वान बनते। गोपाल पंत जीवन में सदाचार, सुशीलमनी, तपस्वी, धर्मपरायण, सरल, संयमी इत्यादि गुणों से भरपूर थे। इस प्रकार के जीवन का प्रभाव उनके शिष्यगणों पर बहुत पड़ता था और वह भी विद्वत्ता सम्पन्न हो जाते।

गोपाल पंत का एक सुपुत्र था जिसका नाम ज्योति पंत था। पंडित जी (गोपाल पंत) की तीव्र जिज्ञासा थी कि उनका पुत्र पढ़ लिख कर विद्वान बने। वह अतीव लग्न के साथ अहर्निश उसे भी बहुत परिश्रम करके पढ़ाने लगे। उनकी तीव्र जिज्ञासा निराशा में परिणत हो गई क्योंकि उनका बेटा पढ़ाई में रुचि नहीं रखता था। उसे तो केवल राम नाम ही प्रिय था।

यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् उनके पिता ने 'गायत्री मंत्र' उच्चारण करने को कहा। लगभग छः मास पश्चात् जब उन्होंने बुला कर पूछा तो वह एक मंत्र भी उच्चारण न कर सके। पंडित जी तड़प उठे। मोह से वशीभूत हो कर उन्होंने पुत्र को घर से निकाल दिया और उसे कहा कि यदि इस घर में रहना है तो विद्या ग्रहण करके आओ।

जब यह समाचार ज्योति पंत की माता ने सुना तो वह पुत्र वियोग से तड़प उठीं। पंडित जी भी अनुभव करने लगे कि मनोआवेश जीव को कैसे भड़का देता है और उस मन की ज्वाला में तपित होकर कैसे-कैसे अज्ञानता पूर्ण कर्म हो जाते हैं। उनका मन बहुत दुःखी हो रहा था। इकलौते बेटे की अनुपस्थिति का ध्यान, घर में सूनापन, बारम्बार उसकी स्मृति, उदासी की लहर ला रही थी। वह बहुत पश्चाताप करने लगे और उसे ढूँढने का भरसक प्रयत्न करने लगे। पत्नी की दारुण-दशा देख कर तो वह और भी तड़प उठे। पुत्र की खोज में वह जगह जगह पर भटके परन्तु कहीं पर भी उसका नामोनिशान न मिला।

ज्योति पंत के लिये पिता का वाक् तो मानो उसके कल्याण का कारण बन गया। पिता के वाक् से उसके मन को ऐसी ठेस लगी कि उसकी दुनिया ही बदल गई। वह घर से निकल कर अपनी कीर्तन मंडली के कुछ मित्रों सहित जंगल में जा पहुँचे। वहाँ पर एक गणेश जी का पुराना मंदिर था। ज्योति पंत उस समय विद्या प्राप्ति के भाव से रंगे हुए थे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो उन्हें विद्या की साक्षात् प्रतिमा, विद्या के स्रोत मिल गये हों। मनोमन सोचने लगे, 'मैं इनसे पूर्ण विद्या का भंडार माँग लूँगा। यह तो दयालु नाथ है, मेरी विनती मान लेंगे। इस प्रकार मैं अपने पिता को भी प्रसन्न कर लूँगा।'

ज्योति पंत ने अपने सब मित्रों से कहा कि हम श्रद्धापूर्ण भाव से गणेश जी के चरणों में बैठ जाते हैं। वह हमारी विनती अवश्य ही स्वीकार करेंगे। ज्योति पंत के साथी इस बात के लिये सहमत न हुए। उनका भाव भी उचित था क्योंकि विद्या प्राप्ति उनकी माँग नहीं थी। वह वापिस जाने के लिये तैयार हो गये। ज्योति पंत का साथ किसी ने नहीं दिया। साँझ का बेला हो गया था, सब साथी भयभीत हो गये।

यह सत्य है कि जो काज हम करना चाहते हैं उसके लिये हमारी विचारधारा भी उसी प्रकार की हो जाती है और जो काज हम नहीं करना चाहते, हम उसी प्रकार के विचारों का समर्थन करने लगते हैं।

ज्योति पंत ने अपने मित्रों से प्रार्थना करी, "आप लोग अपने-अपने घर जाईये। मैं बिन दर्शन वापिस नहीं लौटूँगा। इस मन्दिर को भली भाँति लीप कर बंद कर दो ताकि गाँव वाले बारम्बार आकर मेरी तपस्या भंग न करें।" साथ ही उन लोगों से यह भी कह दिया कि वे किसी को भी इस विषय में न बतलायें।

उन लड़कों ने प्रतिज्ञानुसार दरवाज़ा बंद कर दिया और जाकर किसी को कुछ भी नहीं बतलाया।

ज्योति पंत के माता-पिता स्थान-स्थान पर भटकते रहे। उन्हें खाने-पीने तक की होश न रही। हर स्थान पर इसी आशा से जाते कि उनका पुत्र मिल जायेगा, परन्तु जहाँ भी जाते उन्हें निराशा का सामना करना पड़ता। इस प्रकार पाँच दिन बीत गये। उनके घर में चूल्हा तक नहीं जला। सच ही तो है, जिस घर का इकलौता दीप ही बुझ जाये वहाँ प्रकाश कौन जलायेगा?

उनकी आर्त पुकार को सुन कर दयालु भगवान रह न सके। शिव भगवान अपने भक्त की तड़प सुन कर स्वप्न में प्रकट हो कर कहने लगे, "वत्स, तुम्हारा पुत्र महानुभवी, भक्त और यशस्वी होगा। तुम चिंता न करो उस पर कृपा हो चुकी है।"

इधर ज्योति पंत मन्दिर में अनन्य भाव से भगवान का चिंतन करने लग गये। छः दिन तक इसी प्रकार से ध्यान लगा कर प्रभु चरणों में बैठे रहे। उनका चित्त गणेश जी के चरणों में टिका रहा। सातवें दिन भगवान ने स्वयं प्रकट होकर ज्योति पंत के सीस पर आशीर्वाद भरा हाथ रखा व कहने लगे, "वत्स, हम तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हैं। तुम मुँह माँगा वर माँग लो।"

इस पर ज्योति पंत की चेतना जागृत हो गई व उसकी आँख खुल गई। गदगद होकर प्रभु चरणों में गिर पड़ा और बोला, "हे देव! सत्यता तो यह है कि सर्वप्रथम मेरी इच्छा विद्या से पूर्ण लाभ उठाने की थी परन्तु अब आपके दर्शन पाकर मन गदगद हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि आपके दर्शनमात्र से ही तुष्टि हो गई है। अब मैं केवलमात्र निष्काम सेवा और चरणनुराग ही चाहता हूँ, इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ नहीं चाहिये। हे करुणा के सागर, बस मैं इतनी श्रद्धा लेकर आपके चरणों में आया हूँ।"

गणेश जी ने ज्योति पंत की प्रार्थना सुन ली व उसको विद्या प्राप्ति की इच्छा-पूर्ति का वरदान दे दिया तथा यह भी कह दिया कि तुम्हारा दूसरा मनोरथ भी पूर्ण हो जायेगा परन्तु उस मनोरथ की पूर्ति के लिये अभी समय चाहिये। उस मनोरथ की पूर्ति के लिये पूर्ण विधि से परिचित्त करवाते हुए कहा कि अभी तुम काशी में जाकर ६ महीने, अनुष्ठान करो, फिर ब्यासदेव जी के द्वारा गंगा जी में तुझे मंत्र प्राप्ति होगी, तब तेरी कामना पूर्ण होगी। दयालुता की

प्रतिमा गणेश जी ने इतना भी कह दिया "यदि किसी कारणवश, मेरी याद आई तो मुझे स्मरण कर लेना मैं तुरन्त ही दौड़ा चला आऊँगा। अब तुम अपने घर लौट जाओ। तुम्हारे मातु-पितु बहुत आतुर हो रहे हैं और तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" तत्पश्चात् भगवान अंतर्धान हो गये।

विद्या प्राप्त करके ज्योति पंत घर आये। माता-पिता की प्रसन्नता का कोई पारावार न रहा। ज्योति पंत ने अतीव श्रद्धा सहित पूर्ण वृत्तांत अपने मातु-पितु को सुनाया। उनके पितु ने अपने पुत्र की विद्वता के दर्शन कर लिये थे। उन्हें अब पूर्ण विश्वास हो गया था कि उनका पुत्र सच ही विद्या रूपा प्रसाद प्राप्त करके आया है। यह समाचार गाँव वालों को भी प्राप्त हो गया। सभी ग्रामीण प्रसन्नता से फूले न समाये तथा उनके घर में जाकर बधाई देने लगे। उन लड़कों को बहुत पश्चाताप हुआ, जो ज्योति पंत का साथ छोड़ कर जंगल से चले गये थे। यह सच ही है कि भगवान की कृपा उन्हीं पर होती है जो इसके अधिकारी होते हैं।

कुछ काल व्यतीत हो गया। ज्योति पंत के मामा पूना में एक प्रधान कार्यकर्ता थे। वह धनवान और विद्वान थे। ज्योति पंत की माता ने अपने इक्लौते पुत्र को कार्य कुशल और सुयोग्य बनाने के लिये अपने भाई के पास भेज दिया। ज्योति पंत के मामा के पास सांसारिक गुण थे। उन्होंने अपनी बहिन के बेटे को रख तो लिया परन्तु उसके निर्धन होने के कारण उसे कहीं साथ लेकर जाने में संकोच करने लगे। जग की लाज निभाते हुए, ज्योति पंत को एक साधारण नौकरी पर नियुक्त करवा दिया। ज्योति पंत प्रसन्नता के साथ जीवन में निर्वाह करने लगे।

वहाँ के पेशवा ने पूर्ण बहीखाते तीन दिन में समाप्त करने का हुक्म दे दिया। वह काम इतना अधिक था कि सारे कर्मचारी भी मिल कर उस काज को पूरा नहीं कर सकते थे। अन्य कर्मचारी दत्तचित्त होकर काज नहीं करते थे, इस कारण समय पर उनका काज पूरा न हो सका जिससे उसके मामा चिंतित रहने लगे। पेशवा के सम्मुख किसी की भी बोलने की हिम्मत नहीं थी। ज्योति पंत ने अपने मामा की चिंतित अवस्था का कारण पूछ लिया।

उनके मामा उस समय तो बहुत घबराये हुए थे इसलिये किसी भी प्रकार की सहायता के लिये उद्यत थे। ज्योति पंत अपने मामा की इस अवस्था को देखकर कहने लगे, "मामा जी! आप चिंता न करें, मैं आपका यह काज तीन दिन में पूरा करवा दूँगा। परन्तु आपको एक काम करना

होगा। किसी एकांत कमरे में बहीखाते, कागज-पेंसिल तथा जीवनोपयोगी जिन-जिन वस्तुओं की आवश्यकता हो सकती है उन सबको वहाँ रखवा दें। इसके अतिरिक्त फलाहार तथा जलपान का भी पूर्ण प्रबन्ध करके कमरा बंद करवा दें। तीन रोज के पश्चात् जब मैं आपको संकेत करूँगा तो आप कमरा खोल देना।" उनके मामा इस समय तो घबराये हुए थे। उन्होंने अपने सहयोगी कर्मचारियों से परामर्श लेकर यथायोग्य पूर्ण प्रबन्ध करवा दिया। कई लोगों के लिए यह केवल हास्यपूर्ण घटना बन गई। कई अन्य लोगों ने बहुत कुछ कहा।

ज्योति पंत ने अन्दर जाकर विधिवत् भगवान के चरणों में पूजन किया और सच्चे स्मरण के परिणामस्वरूप गणेश जी को अपने पास बुला लिया। तत्काल गणेश जी प्रकट होकर बुलाने का कारण पूछने लगे। "वत्स! आज तूने किस काज के अर्थ मुझे याद किया है?" ज्योति पंत ने पूर्ण वृत्तांत भगवान को सहज में बतला दिया और काज की पूर्ति के लिए प्रार्थना करी। भगवान ने भक्त की प्रार्थना सुनकर उसकी इच्छानुसार तीन दिन में सारा काज समाप्त कर दिया और तत्पश्चात् वह अंतर्धान हो गये।

तीन दिन बीत चुके थे। बाहर सब लोग प्रतीक्षा कर रहे थे और कुछेक कह रहे थे कि यह नन्हा सा बालक किस प्रकार से इस काज को समाप्त करेगा! कई दूजे लोग उन्हें पूछ रहे थे कि आपने कैसे इस नन्हें से बालक पर विश्वास कर लिया? कई कह रहे थे, "यदि अंदर दम घुटने पर बालक को कुछ हो गया हो तो लेने के देने पड़ जायेंगे। आपकी बहिन बहुत दुःखी हो जायेगी। सो भलाई तो इसी में है कि आप उस बालक को बाहर निकालें तथा कार्य पूर्ति के लिए कोई दूजा ही ढंग सोचें।"

इतनी बात चल ही रही थी कि ज्योति पंत ने दरवाज़ा खोलने का संकेत किया। उसके मामा ने तुरन्त दरवाज़ा खुलवा दिया। सारे बहीखाते तैयार देखकर सब लोग आश्चर्य-चकित रह गये। अब महीपति जब उन बहियों को लेकर दरबार में पहुँचे तो पेशवा भी अवाक् होकर देखते ही रह गये। उन्होंने महीपति से काम करने वाले का नाम पूछा और संग में उसे दरबार में बुलाने का आदेश भी दिया। महीपति को भी बहुत मान मिल रहा था सो उसने अतीव प्रसन्न होकर ज्योति पंत को राजकीय पोशाक में बुलवा भेजा। ज्योति पंत ने भेजे हुए दरबारी वस्त्र नहीं पहरे। बस अपने साधारण वस्त्रों में दरबार में आया और यथायोग्य प्रणाम करके नम्रता से एक ओर खड़ा हो गया।

उसके ज्योतिर्मय चेहरे को देखकर सब मंत्रमुग्ध रह गये। तत्पश्चात् पेशवा ने बड़े विनम्र भाव से बुलाकर उसका परिचय पूछा। ज्योति पंत ने अपना परिचय दिया, "राजन्! महीपति जी मेरे प्राण हैं। आज जो कुछ भी मैं हूँ इन्हीं की कृपा से हूँ। यह मुझे जो आज्ञा देते हैं, मैं वही काम कर देता हूँ।"

बालक की सरल वाणी सुनकर पेशवा बहुत प्रसन्न हुए। पेशवा ने प्रश्न किया, "ज्योति पंत! इतना बड़ा काज तीन दिन में कैसे पूरा हो गया? इतने सुन्दर अक्षर तो मैंने कभी भी नहीं देखे। इस पूर्ण घटना की वास्तविकता को हम जानना चाहते हैं।" सरल हृदय ज्योति पंत छुपाव तो जानते ही नहीं थे।

इस पर कहने लगे "महाराज! मैं गणेश जी का भक्त हूँ। उन्होंने ही मुझे एक बार दर्शन देकर यह वरदान दिया था कि 'जब भी किसी आवश्यक काज के लिए मेरी ज़रूरत पड़ी तो मुझे बुला लेना!' इस काज की पूर्ति असंभव जानकर, मैंने गणेश जी से प्रार्थना करी। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक यह काज संवार दिया।"

ज्योति पंत अपने काज अतीव सुचारु ढंग से करने लगे। कुछ ही दिनों में उन्होंने अपने मातु-पितु को भी अपने पास बुला लिया और वह श्रद्धायुक्त भाव से अपने मातु-पितु की सेवा करने लगे।

कुछ और दिन व्यतीत होने पर वहाँ पठानों के आक्रमण का समाचार मिला। पेशवा की फौज के एक भाग को ज्योति पंत के नेतृत्व में युद्ध में भेजा गया। इसके कुछ दिनों के पश्चात् ज्योति पंत को स्वप्न में भगवान का आदेश मिला, 'अब तुम पर विशेष दया का समय आ गया है इसलिये तुम तुरंत काशी चले जाओ!'

दूसरे दिन ज्योति पंत ने जाकर त्यागपत्र दे दिया जिसे पेशवा ने मान लिया। अपना सम्पूर्ण धन वैभव एक पल में निर्धनों में बाँट कर वह काशी पहुँच गये। वहाँ पर जाकर उनका त्यागमय जीवन आरम्भ हो गया। प्रातः मंत्र-जाप और पाठ में व्यतीत हो जाता। तत्पश्चात् भिक्षा माँग कर लाते और भगवान को भोग लगाने के बाद स्वयं ग्रहण करते। इस प्रकार निर्विघ्न और अनन्य भाव के साथ छः मास तक तप करते रहे।

एक दिन एक म्लेच्छ ने आकर उनके शरीर पर पानी के छींटे डाल दिये। वह पुनः स्नान करके जाप करने लगे। उसने फिर छींटे डाले। तब ज्योति पंत उन्हें कहने लगे, 'देखो भाई! इस तरह से किसी अनुष्ठान में विघ्न डालना उचित नहीं।' ज्योति पंत का सात्त्विक प्रकोप देखकर वह म्लेच्छ हंसने लगा और वेदव्यास के रूप में देखते ही देखते बदल गया। ज्योति पंत म्लेच्छ रूप में आये हुए भगवान के दर्शन करके गदगद होकर उनके चरणों में गिर गये।

व्यासदेव जी ने प्रसन्न होकर आज्ञा दी, "वत्स! आज की रात व्यास मण्डप में जाकर रहो। प्रातः मै तुम्हें श्रीमद्भागवत लाकर दूँगा जिसके फलस्वरूप तत्व ज्ञान और प्रेम भक्ति का प्रसाद मिलेगा। इतना कहकर भगवान व्यास अन्तर्धान हो गये। रात्रि को ज्योति पंत जब सो रहे थे तो व्यासदेव जी ने ग्रंथ उनके पास रख दिया। प्रातः उठते ही जब ग्रंथ के दर्शन किये तो वह अति प्रसन्न हुए। स्नान करके उन्होंने विधिवत् पाठ करना आरम्भ कर दिया। सच्ची लग्न तथा अनन्य भाव का प्रसाद यह मिला कि उनका तप और तेज भक्ति के बल पर बढ़ गया।

एक दिन भगवान बूढ़े ब्राह्मण का रूप धर कर ज्योति पंत का पाठ सुनने लगे। भगवान शंकर के प्रभाव से जिह्वा लड़खड़ा गई, उच्चारण में त्रुटि आने लगी। भगवान ने पूछा "क्या आप इसी प्रकार से पाठ करते हैं?" भक्त की सच्ची लग्न और पावनता का यह प्रसाद मिला कि भक्त ने भगवान को पहचान लिया और चरणों में गिर पड़े। शिव ने आज्ञा दी "हम तुम्हारी भक्ति से अतीव प्रसन्न हैं तुम्हारा मनोरथ पूर्ण हुआ, तुम्हें तत्वज्ञान और प्रेम भक्ति प्राप्त हो चुकी है। अब किसी प्रकार के तप की आवश्यकता नहीं।" तुम अब जग में जाकर लोगों को कल्याण मार्ग पर लगाओ। यह कह कर भगवान अंतर्धान हो गये। ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
दिसम्बर २०१६

अर्पणा से समाचार

दिव्य ज्ञान - 'उर्वशी'

२ अक्तूबर को मधुबन में परम पूज्य माँ के दिव्य ज्ञान के स्वतः स्फुरित प्रवाह को 'उर्वशी' दिवस के रूप में मनाया गया। सुनन्दा बख़्शी के भक्तियुक्त समधुर गायन से मन्दिर गुंजायमान हो उठा।

३६ वर्षों से सेवा कार्यों में संलग्न - अर्पणा अस्पताल

परम पूज्य माँ द्वारा ग्रामीण भाई बहिनों को आधुनिक चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए स्थापित, अर्पणा अस्पताल में प्रत्येक वर्ष १००० गाँवों से लगभग १००,००० रोगियों की देखभाल की जाती है। ७ विशिष्ट विभागों के इस आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अस्पताल में रोगियों को सभी समर्पित डॉक्टरों एवं कर्मचारियों द्वारा निवारक और उपचारात्मक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

सेवापूर्ण यज्ञ

१४-१६ अक्तूबर को अर्पणा के हस्तशिल्प विभाग द्वारा डॉ. राज व इन्दर गुप्ता एवं डॉ. लीना व राहुल गुप्ता के नई दिल्ली स्थित निवास स्थान पर सेल आयोजित की गई। ये ३ दिवस प्रेमपूर्वक सेवा कर पाने के शिक्षाप्रद अवसर बन गये।

अर्पणा के दिग्गज

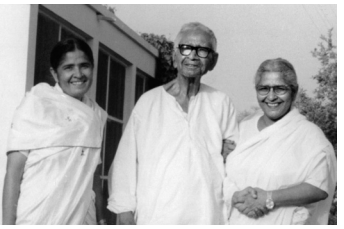

परम पूज्य माँ की बड़ी बहन एवं 'सोशल वर्कर्ज़ होम' की संस्थापक सुश्री निर्मल आनन्द का अद्वितीय जीवन २० नवम्बर २०१६ को, ७, मॉडल टाउन, करनाल में बड़े उल्लासपूर्वक मनाया गया। उपस्थित जनों में सुश्री निर्मल आनन्द के सगे-सम्बन्धी, पूर्व में होम में रह चुकीं स्त्रियाँ एवं उनके अन्य मित्र थे। सुश्री निर्मल आनन्द के पसंदीदा भजनों से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। 'जपुजी साहिब' के गायन के साथ साथ उनके जीवन का कथाचित्र भी दिखाया गया।

अपने सद्गुरु परम पूज्य माँ के चरणों में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण करते हुए श्री आर एम सभरवाल (रत्ती अंकल), अर्पणा के सेवाकार्यों में पूर्णतया संलग्न रहे। २० नवम्बर २०१६ को, उनके जन्म दिवस पर उन्हीं के जीवन को कथाचित्र के रूप में अर्पणा मन्दिर में दिखाया गया। बड़ी-बड़ी भारतीय कम्पनियों में उच्च पदवी पर आसीन रहने के पश्चात्, अर्पणा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

इसी दिन श्रीमती देवी वासवानी के जन्म दिवस पर उन्हें भी प्रेमपूर्वक याद किया गया।

हरियाणा ग्रामीण सशक्तिकरण

बेहतर है - तैयारी करके रोकथाम न कि मरम्मत एवं पश्चाताप

सितम्बर २०१६ में २ महिला महासंघों के स्वयं सहायता समूहों की आमसभा का यह एजेंडा था। माइक्रोफाइनेंस कम्पनियों ने ग्रामीण समुदायों के भीतर प्रवेश करते हुए त्वरित और आसान ऋणों को उपलब्ध करा कर स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को विभिन्न स्रोतों से एकाधिक ऋण लेने के लिए आकर्षित करती है।

स्वयं सहायता समूहों के ७०० से अधिक प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया, अपनी बचत को महासंघ में जमा कराया एवं एक जीवंत नाटक देखा जिसमें सदस्यों के भुगतान की क्षमता से अधिक कर्ज़ लेने की आशंका को दर्शाया गया।

टपराना गाँव में २३ स्वयं सहायता समूह का आयोजन किया और संगोही गाँव में १९ स्वयं सहायता समूहों का आयोजन किया गया। वार्ड सदस्य एवं मुखिया महिलाओं की उपलब्धियों से प्रभावित हुए।

विशिष्ट विकलांग व्यक्तियों के लिए विशेष चिकित्सा शिविर

मानसिक मंदता, सेरेब्रल पाल्सी, मिर्गी व मानसिक परेशानी से पीड़ित विशिष्ट विकलांग व्यक्तियों के लिए २ विशेष चिकित्सा शिविर आयोजित किये गये।

डॉ. गिरोत्रा द्वारा ४ गाँवों में से ८२ रोगियों की जाँच की गई। इन शिविरों का आयोजन कल्पना और जयदेव देसाई, USA के मित्रों द्वारा किया गया।

अर्पणा IDRF एवं जयदेव और कल्पना देसाई के मित्रों का महिला सशक्तिकरण एवं विकलांग लोगों के कार्यक्रमों में समर्थन देने के लिए अत्यन्त आभारी है।

दूरदराज़ क्षेत्रों में अर्पणा अस्पताल

बूढनपुर गाँव में सितम्बर में एक निःशुल्क स्कूल स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन किया गया जहाँ १९६ बच्चों की आँखों की जाँच की गई। समस्याओं का पता लगाने में सहायता करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

३ निःशुल्क नेत्र शिविरों का समालखा में सितम्बर, अक्तूबर व नवम्बर में आयोजन किया गया जहाँ ४७३ रोगी आये। ऑपरेशन निःशुल्क या अत्यधिक रियायती थे।

बसताड़ा गाँव में आँखों की समस्याओं की समय पर पहचान के लिए सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अर्पणा अपने नेत्र सम्बन्धित कार्यक्रमों में योगदान के लिए CBM का बहुत आभारी है।

दिल्ली के कार्यक्रम

दीवाली से पूर्व 'रिजॉयस' में संगीत समारोह

१६ अक्तूबर को वसंत विहार स्थित अर्पणा के सामुदायिक केन्द्र 'रिजॉयस' से भक्तिमय संगीत की मधुर लहरें गुंजायमान हो रही थीं। श्रीमती आस्था गोस्वामी ने अपने अनूठे अंदाज, पद्यावली गायन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

'रिजॉयस' में NIIT सर्टिफिकेट कोर्स शुरु किया गया

श्रीमती सुषमा सेठ द्वारा प्रथम बैच के छात्रों को १६ अक्तूबर को NIIT कम्प्यूटर कोर्स पूरा करने पर प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया। सर्वोदय राजकीय विद्यालय के १८ छात्रों ने इस ३ मास के कोर्स को पूरा किया।

मोलरबंद में अर्पणा के केन्द्र से सफ़ल विशेषीकृत छात्र

नर्सरी टीचर्ज़ प्रमाणपत्र

शिल्प और सिलाई कक्षायें : २६ प्रशिक्षुओं ने १ साल के पाठ्यक्रम के लिए प्रमाणपत्र प्राप्त किये।

बेसिक कम्प्यूटर कोर्स : १८ छात्रों ने NIIT के प्रमाणपत्र प्राप्त किये (अप्रैल - जून)

ब्यूटी कल्चर प्रशिक्षण : १९ प्रशिक्षुओं ने ६ महीने का कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया।

नर्सरी टीचर्ज़ प्रशिक्षण : १३ प्रशिक्षुओं ने १ साल के कोर्स को सफलतापूर्वक पूरा करने पर प्रमाणपत्र प्राप्त किये।

गहरी कृतज्ञता से अर्पणा, एस्सेल फाउंडेशन, अवीवा प्राइवेट लिमिटेड एवं केयरिंग हैण्डज़ फॉर चिल्ड्रन (यूएसए) का शैक्षिक कार्यक्रमों में समर्थन के लिए अभिनन्दन करता है।

हिमाचल के कार्यक्रम

निःशुल्क स्त्रीरोग संचालन से पीड़ा से छुटकारा

२५ सितम्बर २०१६ को अर्पणा स्वास्थ्य देखभाल एवं जाँच केन्द्र में एक निःशुल्क स्त्रीरोग व प्रसूति शिविर आयोजित किया गया। डॉ. हेमन्त शर्मा ने ८२ रोगियों की जाँच की, जबकि डॉ. सी सिंह ५२ रोगियों की सामान्य रोगों की जाँच की। १२ रोगियों को ऑपरेशन की ज़रूरत थी जो निःशुल्क हुए। अल्ट्रासाउंड, एक्सरे, लैब टैस्ट भी निःशुल्क थे।

हिमाचल प्रदेश में ग़रीब रोगियों एवं विशिष्ट शिविरों में समर्थन के लिए बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट को गहरी कृतज्ञता। हिमाचल में विकास कार्यों के लिए टॉम सार्जेंट और टाइड्ज़ फाउंडेशन का भी अतीव धन्यवाद।

हिमाचल व हरियाणा में आपातकालीन कार्यशालाएं

उत्तरी आयरलैंड के स्वयंसेवकों द्वारा जीवन रक्षक प्रशिक्षण

अर्पणा अस्पताल में

श्री फ्रैंक आर्मस्ट्रांग, संभागीय प्रशिक्षण अधिकारी, उत्तरी आयरलैंड एम्बुलेंस सेवा, और स्टीवन मटीर, कार्ल ब्लूमर एवं सुश्री गिलियन डिट्टी, उत्तरी आयरलैंड से सहयोगी स्वयंसेवक स्टाफ़ जो भारत अपने ख़र्च पर आये, ने १२-१७ नवम्बर को अर्पणा अस्पताल में ६ दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। डॉक्टरों, नर्सों एवं सहयोगी स्टाफ़ के लिए प्रथम २ दिन उन्नत जीवन रक्षक कार्यशालाएँ आयोजित की गईं जबकि साँस उखड़ना और ट्रॉमा अगले २ दिन का विषय बने। नवजात शिशु और बालचिकित्सा अंतिम २ दिन के विषय रहे।

प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण

अर्पणा गजनोई केन्द्र, हिमाचल में, नवम्बर ३-६ को, अर्पणा कार्यकर्ताओं, १२ स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं एवं १४ पर्यटक गाइड प्रशिक्षणार्थियों के लिए श्री फ्रैंक आर्मस्टॉग एवं उत्तरी आयरलैंड के स्वयंसेवक सहयोगी मार्क एंडरसन ने प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण दिया। जीवन रक्षक सीपीआर भी सिखाया गया।

अर्पणा सभी उदार दाताओं के प्रति आभारी है जो हमें इन सभी कार्यक्रमों में सहयोग देते हैं।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:
Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send contributions in USA to:
Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Send contributions to Arpana Canada:
c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.
Arpana Hospital: 91-184-2380801, **Info & Resources Office:** 91-184-2390905
emails: **at@arpana.org** and **arct@arpana.org**
Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**